अपराध का सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश पर प्रभाव– मेरठ शहर का एक अध्ययन

डॉ0 नरेश कुमार

एसो0 प्रोफे0, भूगोल विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ

I ारांश

समाज का प्रत्येक नागरिक मूल्य और मान्यताओं को मानने के प्रति बहुत सजग नहीं रहा। परिणामतः उसने उसने नैतिक, सामाजिक, वैधानिक नियमों का अपने हित व मानसिकता के अनुरूप उल्लंघन भी किया हैं प्रतिक्रिया स्वरूप व्यक्ति व समाज को ऐसे तत्वों से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षति पहुँचती है। चूँकि यह क्षति स्थापित मूल्यों और मान्यताओं के उल्लंघन के कारण हुई है। अतः समाज ने इसे अपराध की संज्ञा से विभूषित किया है। यह बात दूसरी है कि व्यक्ति शारीरिक, क्षमताओं, मानसिक असमानताओं, सामाजिक–आर्थिक दबावों और परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपराध करता हो किन्तु, निश्चित रूप से वे कार्य समाज के व्यवहार के नियामक आदर्शों व आदेशों के विपरित होते हैं तथा सामाजिक व आर्थिक परिवेश को क्षति पहुँचाते है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 नरेश कुमार,
''अपराध का सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश पर प्रभाव–मेरठ शहर का एक अध्ययन'',
शोध मंथन, जून 2017,
Voll. 8, No. 2
पेज सं0 170–176
http://anubooks.com/?page_id=2030
Artcile No.28 (SM435)

परिचय

विधि तंत्र

इस अध्ययन से सारी जानकारियाँ द्वितीयक आँकड़ों के द्वारा ली गई है जो कि समाज में अपराध में उत्पन्न होने वाली सामाजिक व आर्थिक दशाओं को दर्शाती है। सामाजिक व आर्थिक कारकों से सम्बन्धित सूचनाएँ समाज के कुछ गणमान्य सामाजिक व्यक्तियों के साक्षात्कार, सामान्य नागरिकों के साक्षात्कार, अपराधियों के साक्षात्कार, अपराध नियंत्रण की एजेन्सियों के साक्षात्कार से लिये गये हैं। जिससे प्रतिशतता के आधार पर दर्शाया गया है।

अपराध का सामाजिक व आर्थिक परिवेश पर प्रभाव

अपराध का सामाजिक परिवेश का प्रभाव :

अपराध समाज के किसी भी सदस्य के द्वारा किया गया वह कार्य है जिससे समाज के अन्य सदस्यों को हानि होती है अथवा व्यक्तियों के अधिकारों का हनन होता है। दूसरे शब्दों में उस व्यक्ति का कार्य समाज की गतिशीलता में व्यवधान उत्पन्न करता है। अपराध के कारण समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को पाश्चात्य व भारतीय विचारकों ने समान रूप से किया है। सर्वप्रथम पाश्चात्य विचारक फलोरिन, नेनकी, वार्म्स, टीटर, गारफैलो, जॉन लिविस गिलीन आदि ने अपने विचार प्रकट किये हैं।

''फलोरिन तथा नेनकी'' का मानना है कि अपराध वह व्यक्तिगत क्रिया है जो सामूहिक व्यवस्था को क्षति पहुँचाती है या जिससे क्षति पहुँचाने का भय बना रहता है। इससे सामाजिक व्यवहार को वैधता का उल्लंघन तथा सामूहिक व्यवस्था के मर्यादात्मक आदर्शों की अवज्ञा होती है।

''गारफैलो'' ने अपराध को समाज में अनैतिक व हानिकारक कष्त्य माना है क्योंकि इससे समाज के नैतिक आदर्शों को क्षति पहुँचती है।

भारतीय विद्धानों ने अपराध का मुख्य कारण धन प्राप्त करने की अधिक इच्छा को माना है। यदि परिवारों में बच्चों का तिरस्कार हो जाये, तो वे आपराधिक प्रवृत्ति के हो जाते हैं।

इसी प्रकार शारीरिक दुर्बलता व शारीरिक अवयवों के कार्य न करने की स्थिति में व्यक्ति में जो हीन भावना बैठ जाती है उस कारण वह सामान्यतः आपराधिक प्रवृति की ओर अग्रसर हो जाता है तथा जिससे इसका असर समाज पर देखने को मिल जाता है।

''गारफैलो'' ने यह निष्कर्ष निकाला है कि मानसिक हीनता तथा अल्पबुद्धि का होना तथा अनायास उत्तेजित हो जाना व्यक्ति को सामान्यतः अपराध की और अग्रसरित करता है।

समाजशास्त्रियों का मत

यदि परिवार में माता–पिता आपराधिक प्रवृत्ति के हैं अथवा पारिवारिक विघटन हो रहा है अथवा युवकों पर माता–पिता का नियंत्रण नहीं है अथवा उनकी अवहेलना की जा रही है या उन्हें अधिक स्नेह दिया जा रहा है तो भी अपराधी प्रवृत्ति का विकास हो जाता है।

आर्थिक रूप से परिवार का निर्धन होना अथवा अत्यधिक वैभवशाली होना अथवा

व्यापारिक अवनति, बेरोजगारी व्यावसायिक मनोरंजन आदि भी व्यक्ति को अपराध के प्रति प्रवृत्त कर देते हैं। दूसरे शब्दों में, धन की उत्कृष्ट अभिलाषा और आकांक्षाएँ भी व्यक्ति को अपराधी बना देती है।

वैज्ञानिक मत

अपराध का समाज पर पड़ने वाले प्रभाव के मुख्य कारण वैज्ञानिक वातावरण को भी मानते हैं। जिस संगति में किशोर व युवा रहते हैं, वह वातावरण व संगति उन्हें अच्छा व बुरा बना सकती है। दुर्भाग्यवश यदि वे बुरी संगति में संलग्न हो जाते हैं तो उनमें अनायास अपराध की प्रवृति जन्म लेती है। यही नहीं प्रशासनिक संस्थाएँ भी जैसे– न्यायालय, जेल, पुलिस भी अपराध को प्रजन्मित करने में एक अलग ही भूमि अभिनीत करती है। उदाहरण– जटिल न्यायिक प्रक्रिया व न्यायाधीशों पर बढ़ते हुए राजनीतिक दबाव निर्दोष व्यक्ति को भी दण्डित करा देते है। इस स्थिति में प्रतिहिंसा के कारण भी निर्दोष व्यक्ति अपराधी बन जाते हैं व इस सामाजिक व्यक्ति का व्यवहार हिंसात्मक बन जाता है जिसका प्रभाव समाज पर हानिकारण साबित होता है।

भौगोलिक सिद्धान्त

इन विचारकों से हटकर भौगोलिक सिद्धान्तवादी मांटेस्कयु का मानना है कि जलवायु व भौगोलिक अवस्थितियाँ व्यक्ति को अपराधी बनाने में सक्षम है।

म्वेटलेट व गैरी ने इसे धार्मिक लॉ कहा है। उनके अनुसार अपराध पर्यावरण से सम्बन्धित होते हैं। अनुकूल पर्यावरण में अपराध कम होंगे व प्रतिकूल पर्यावरण में अधिक होंगे। जनसंख्या का अधिक घनत्व होना, स्थानीय व्यक्तियों का अधिक वैभवशाली और सम्पन्न होने के कारण अपराधों की संख्या बढ़ जाती है। जिसका असर समाज पर घातक सिद्ध होता है।

भूगोलवेत्ता **मान्टेस्क्यू** ने तो यहाँ तक स्थापित करने की चेष्टा की कि विषुवत् रेखा के निकट अपराध अधिक तथा कर्क व मकर रेखा के निकट कम होते है। अपने इस सिद्धान्तों को उसने **"स्प्रिट ऑफ लॉज"** में लिपिबद्ध किया है।

अपराध के कारण सामाजिक परिवेश में उत्पन्न होने वाली समस्याएँ

अपराध का सामाजिक परिवेश पर प्रभाव पड़ने के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याएँ तालिका के द्वारा स्पष्ट है जो उत्तरदाताओं से प्राप्त उत्तरों के आधार पर बनायी गयी है।

1. भ्रष्टाचार

उत्तरदाताओं से प्राप्त उत्तरों के आधार पर यह पाया गया है कि समाज में भ्रष्टाचार का जन्म अपराध की देन है। जब व्यक्ति की मनोवृत्ति अपराध जगत के प्रभाव से प्रभावित होती है तो वह भ्रमित हो जाता है। जिससे वह पूर्ण रूप से भ्रष्ट हो जाता है। यहाँ पर 10 प्रतिशत सामाजिक संस्थाओं, 15 प्रतिशत सामान्य नागरिक, 15 प्रतिशत अपराधी एवं 15 प्रतिशत अपराध नियंत्रण की एजेन्सियों ने समर्थन किया है।

2. जातिवाद

मेरठ नगर क्षेत्र में विभिन्न जातियों के लोग निवास करते हैं। अपराधिक प्रवृत्ति के लोग समाज में जातिवाद को फैलाने का कार्य करते हैं। जातिवाद का समर्थन करने वाली सामाजिक

संस्थाएँ 10 प्रतिशत, सामान्य नागरिक 5 प्रतिशत, अपराधी 5 प्रतिशत, अपराध नियंत्रण की एजेन्सियाँ 10 प्रतिशत है।

3. दहेज हत्या

प्राचीन काल में जन साधारण दण्ड सामाजिक व दैवीय अवमानना से अधिक भयभीत रहता था। जीवन की सफलता व सरलता अपराध करने से रोकती थी। परन्तु आपराधिक युग में व्यक्ति अपराध से ग्रस्त होकर दहेज हत्या, जैसे घिनौने अपराध कर रहा है। फलस्वरूप भारतवर्ष में प्रत्येक 2 घण्टे में 1 दहेज हत्या हो रही है।

तालिका – अपराध के कारण सामाजिक परिवेश में उत्पन्न होने वाली समस्याएँ

क्र0 सं0	अपराध के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याएँ	समाजिक संस्थाएँ	%	सामान्य नागरिक	%	अपराधी	%	अपराध नियंत्रण की एजेन्सियाँ	%
1	भ्रष्टाचार	2	10	3	15	3	15	3	15
2.	जातिवाद	2	10	1	5	1	5	2	10
3.	दहेज हत्या	3	15	2	10	1	5	1	5
4.	अपहरण	3	15	1	5	2	10	2	10
5.	समाज में अराजकता के माहौल की स्थिति	2	10	2	10	4	20	1	5
6.	विकास कार्योंका बाधित होना	1	5	4	20	2	10	4	20
7.	बेरोजगारी	2	10	1	5	3	15	3	15
8.	युवा पीढ़ी में भटकाव	1	5	2	10	2	10	1	5
9.	यातायात बाधित होना	2	10	3	15	1	5	2	10
10.	स्माज में भय का माहौल व्याप्त होना	2	5	1	5	1	5	1	5
	कुल	20	100	20	100	20	100	20	100

औद्योगिक सभ्यता में सुविधाओं के उपभोग के लिए होड आदि अपहरण अपराध वृद्धि के प्रमुख कारण प्रतीत होते हैं। सम्पत्ति, आर्थिक कठिनाइयों व प्रशासनिक व्यवस्था की दुर्बलता मुख्य रूप से इस अपराध की पृष्ठभूमि में दृष्टिगोचर होती हैं क्योंकि यही सब कमियाँ समाज में अपराध को जन्म देती है। जिससे अपहरण अपराध को बढ़ावा मिलता है जिससे समाज प्रभावित होता है।

5. सामाजिक वर्गों के बीच तनाव का बढ़ना

मेरठ नगर क्षेत्रवासियों में खून–खराबे की मनोवर्त्ति बहुतायत में पायी जाती है। परिणामतः सामाजिक ढाँचा बिखरने लगा है। सामाजिक वर्गों के बीच तनाव के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे हैं, जिससे अवश्य ही अपराधों का पारम्परिक स्वरूप परिवर्तित होकर संगठित एवं सामूहिक आपराधिक गतिविधियों के रूप में प्रकट होने लगा है जिससे सामाजिक परिवेश बुरी तरह से प्रभावित होता है। सामाजिक संस्थाओं के व्यक्तियों ने 10 प्रतिशत, सामान्य नागरिक 10 प्रतिशत, अपराधी 20 प्रतिशत, अपराध नियंत्रण की एजेन्सियों ने 5 प्रतिशत समर्थन किया है।

6. विकास कार्यों का बाधित होना

समाज में अपराध के कारण डर व भय का माहौल बना रहता है जिसका असर समाज में हो रहे विकास कार्यों को बाधित कर देता है। इसका समर्थन सामाजिक संस्थाओं ने 5 प्रतिशत,

सामान्य नागरिकों ने 20 प्रतिशत, अपराधियों ने 10 प्रतिशत व अपराध नियंत्रण की एजेन्सियों ने 10 प्रतिशत समर्थन किया है।

7. बेरोजगारी

समाज में अपराधियों के कारण बहुत से उद्योग–धंधे बन्द हो चुके हैं। बहुत बन्द होने के कगार पर हैं एवं कुछ नोएडा, दिल्ली, गाजियाबाद एवं उत्तराखण्ड पलायन कर चुके हैं जिससे लाखों लोग बेरोजगार हो रहे हैं। यह बेरोजगार व्यक्ति समाज में कोई धंधा ने मिलने के कारण अपराधी बन रहे हैं। फलस्वरूप सामाजिक परिवेश प्रभावित हो रहा है। इस सामाजिक समस्या का सामाजिक संस्थाएँ 10 प्रतिशत, सामान्य नागरिक 5 प्रतिशत, अपराधी 15 प्रतिशत एवं अपराध नियंत्रण की एजेन्सियाँ 15 प्रतिशत समर्थन करती है।

8. युवा पीढ़ी में भटकाव

अपराध जगत की चकाचौंध से युवा पीढ़ी में भटकाव देखने को मिलता है। युवा पीढ़ी शॉट कट तरीके से धन कमाने के फेर में अपराधी बन रहे है। फलस्वरूप समाज में अपराध की धीरे–धीरे घुसपैठ के कारण समाज प्रभावित हो रहा है। इस समस्या का समर्थन सामाजिक संस्थाएँ 5 प्रतिशत, सामान्य नागरिक 10 प्रतिशत, अपराधी 10 प्रतिशत, अपराध नियंत्रण की एजेन्सियाँ 5 प्रतिशत समर्थन करती है।

9. यातायात का बाधित होना

समाज में अनेकों अपराध, चोरी, लूट, वाहन लूट जैसी जघन्य घटनाओं के कारण समाज में आये दिन यातायात की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। फलस्वरूप इससे सामाजिक व्यक्ति को दिक्कतों का सामना करना पड़ जाता है। कभी–कभी दिल्ली रोड, बागपत रोड, मवाना रोड पर इतने जाम लग जाते हैं कि वे शाम तक भी नहीं खुल पाते हैं । इस समस्या का समर्थन सामजिक संस्थाएँ 10 प्रतिशत, सामान्य नागरिक 15 प्रतिशत, अपराधी 5 प्रतिशत, अपराध नियंत्रण की एजेन्सियाँ 10 प्रतिशत समर्थन करती है।

10. समाज में भय का माहौल व्याप्त होना

समाज में शक्तिवान व्यक्ति अपना वर्चस्व स्थापित करने में सफल हो जाता है एवं गरीब व्यक्ति कमजोर रह जाता है। जिससे ऐसे समाज में व्यक्तियों में भय का माहौल पैदा हो जाता है जिससे ऐसे समाज को मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षति पहुँचती है।

अपराध का आर्थिक परिवेश पर प्रभाव

औद्योगिक समाज में तीव्र गति में होने वाला विकास भी है जो एक ओर तो पारम्परिक एंव सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करता हुआ न केवल उसे विखण्डित करता है। अपितु उन स्थितियों को प्रजन्मित करता है जिससे अपराध को बढ़ावा मिलता है, तो दूसरी ओर आर्थिक संघर्ष भी अपराध को जन्म देते है। सामाजिक व आर्थिक मूल्यों का आशय यह है कि औद्योगिक विकास के साथ–साथ एक नवीन सामाजिक संरचना का विकास भी होता है। नवीन व्यवस्था प्राचीन मूल्यों को चुनौती देती है तथा प्राचीन व्यवस्था नवीन को स्वीकार नहीं कर पाती। अतः